नाम :- प्रो.भूपेंद्र कुमार दुबे
महाविद्यालय :- दुर्गा महाविद्यालय
संकाय :- कला
पदनाम :- सहायक प्राध्यापक
विभाग :- भूगोल
विषय :- मानव भूगोल
शीर्षक :- भारत की मानव प्रजातियां
(Human Races of India)

Edit with WPS Office

भारत की मानव प्रजातियां

(Human Races of India)

भारतीय उपमहाद्वीप में भी प्रजातियों के अनेक भेद मिलते हैं। इस देश में पूरा प्रस्तर कल के ऐतिहासिक युगों तक विभिन्न प्रजातियां पश्चिम - उत्तर दिशा में पर्वतीय दर्रों के मार्गों से प्रवेश करती रही है। पहले की प्रविष्टि प्रजातियां बाद में आने वाली प्रजातियों से बर्बाद होती हुई अथवा मिश्रित होती हुई दक्षिण - पूर्व की ओर पर्वतीय एवं मानव प्रदेशों में जाकर शरण लेती रही, जो आज भी आदिम जनजाति के रूप में अपनी अलग संस्कृति को स्थापित किए हुए विद्यमान है। विभिन्न ऐतिहासिक युगों में देश के पश्चिम - उत्तर भाग से कई बार विदेशियों के आक्रमण होते रहे हैं इनमें से कुछ वापस लौट गए तथा कुछ यही बस गये। अतः यहां की प्रजातियो में इतना मिश्रण हो चुका है कि यहां से आदि प्रजाति का पता लगाना कठिन कार्य हो गया है।

कई मानव विज्ञानशास्त्रियों जैसे पंचानन मित्त्रा,ग्रिफिथ टेलर एच.डी. टारा आदि के मातानुसार भारत भी मानव प्रजातियों का उद्गम स्थल रहा है। डॉक्टर कौशिक ने पूरा प्रस्तर कल के औजारों आदि के अवशेष के आधार पर मानव की आदिम प्रजाति की उत्पत्ति का स्थल भारत का शिवालिक प्रदेश बताया है ,जहां से' ऑस्ट्रेलॉयड ' प्रजाति की उत्पत्ति को सुनिश्चित बताया है। अनेक विद्वानों का यह भी मत है कि भारत में प्रजातियों का आगमन बाहर से होता रहा और यहां से स्थानांतरित होकर यह श्रीलंका,

Edit with WPS Office

मलेशिया, पूर्वी द्वीप समूह ,आस्ट्रेलिया तथा अफ्रीका आदि को जाती रही है। आज यही मत सर्वाधिक मान्यता प्राप्त है कि भारत की मूल प्रजातियां देश के पश्चिम उत्तर भाग की ओर से बाहर से आई है। यह प्रश्न अवश्य उठना है कि भारत में सर्वप्रथम कौन सी प्रजातियां का आगमन हुआ होगा? इसमें भी विद्वानो के अनेक मत हैं। श्री पंचानन मित्रा के अनुसार यहां सर्वप्रथम प्रोटो - नीग्रोएड का आगमन हुआ ,जिसका स्थानांतरण मध्य एशिया से अफ्रीका को हो रहा था। डॉक्टर मजूमदार के अनुसार यहां सर्वप्रथम प्रोटो- ऑस्ट्रेलिया का आगमन हुआ। हटन , हेडन , डॉ वी.एस गुहा आदि विद्वानों ने भारत की सर्वप्रथम प्रजाति नीग्रोटो को बताया हैं।

भारतीय प्रजातियों का वर्गीकरण

(Classification of Indian Races)

कई मानव विज्ञानशास्त्रियों ने भारत की प्रजातियो का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। इनमें से हर्बट रिजले, हेडुन तथा जी.एस. गुहा आदि का वर्गीकरण महत्वपूर्ण है।

1. सर हर्बट रिजले का वर्गीकरण:-

(1) इंडो- आर्यन प्रजाति :- पंजाब, हरियाणा ,कश्मीर तथा पश्चिमी उत्तर प्रदेश के राजपूत, ब्राह्मण , जाट ,तथा खत्री इस प्रजाति के प्रतिनिधि हैं।

(2) द्रविडियन प्रजाति :- दक्षिण भारत के केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु ,आंध्र प्रदेश, दक्षिणी मध्य प्रदेश ,उड़ीसा, महाराष्ट्र तथा

Edit with WPS Office

छोटा नागपुर के पठार पर यह प्रजाति मिलती है।

(3) मंगोलियड प्रजाति:- हिमालय के ठंडे प्रदेश में रहने वाली यह प्रजाति नेपाल तथा असम तक एक पेटी में मिलती है।

(4) आर्य द्रविडियन प्रजाति:- आर्य एवं द्रविद के अंतर सम्मेलन से उत्पन्न यह प्रजाति उत्तर प्रदेश, राजस्थान ,बिहार में मिलती है।

(5) मंगोल - द्रविडियन प्रजाति :- मंगोल एवं द्रविड़ के मिश्रण से बनी यह प्रजाति बिहार ,बंगाल एवं उड़ीसा में पाई जाती है। बंगाली ब्राह्मण एवं कायस्थ इसके प्रतिनिधि हैं।

(6) साइथो - द्रविडियन प्रजाति:- मंगोल की शाखा सिंथियन तथा द्रविड़ के मिश्रण से उत्पन्न यह प्रजाति मध्य प्रदेश की पहाड़ियों एवं गुजरात के सौराष्ट्र ,कच्छ तथा केरल में कहीं-कहीं मिलती है।

(7) टर्की - ईरानियन प्रजाति :- यह देश के बाहर पाकिस्तान, बलूचिस्तान तथा अफगानिस्तान में रहने वाली प्रजाति है।

रिसले महोदय ने उपयुक्त वर्गीकरण का आधार प्रजातियों का शारीरिक लक्षण ना होकर भाषा को आधार माना है।

Edit with WPS Office